
Trailokya Mangalatmakam Nama Lakshmistotram

त्रैलोक्य मङ्गलात्मकं नाम लक्ष्मीस्तोत्रम्

Document Information

Text title : Trailokya Mangala Namaka Lakshmi Stotram

File name : trailokyamangalanAmakalakShmIstotram.itx

Category : devii, devI, lakShmI

Location : doc_devii

Proofread by : Aruna Narayanan

Translated by : Kanahaiyalal Mishra

Latest update : September 25, 2021

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

February 2, 2024

sanskritdocuments.org

त्रैलोक्य मङ्गलात्मकं नाम लक्ष्मीस्तोत्रम्



अथ त्रैलोक्य मङ्गलात्मकं नाम लक्ष्मीस्तोत्रप्रारम्भः ।

नमः कल्याणदे देवि नमोऽस्तु हरिवल्लभे ।

नमो भक्तप्रिये देवि लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥

नमो मायागुह्यताङ्गि नमोऽस्तु हरिवल्लभे ।

सर्वेश्वरि नमस्तुभ्यं लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

महामाये विष्णुधर्मपत्नीरूपे हरिप्रिये ।

वाञ्छादानि सुरेशानि लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तुते ॥ ३ ॥

उद्यद्भानुसहस्राभे नयनत्रयभूषिते ।

रत्नाधारे सुरेशानि लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तुते ॥ ४ ॥

विश्वित्रवसने देवि भवदुःखविनाशिनि ।

कुयभारनते देवि ! लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तुते ॥ ५ ॥

साधकाभीष्टदे देवि अन्नदानरतेऽनघे ।

विष्ण्वानन्दप्रदे मातर्लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥ ६ ॥

षट्कोणपद्ममध्यस्थे षडङ्गयुवतीमये ।

ब्रह्माण्यादिस्वरूपे य लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥ ७ ॥

देवि त्वं चन्द्रवदने सर्वसाम्राज्यदायिनि ।

सर्वानन्दकरे देवि लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥ ८ ॥

पूजाकाले पठेद्यस्तु स्तोत्रमेतत्समाहितः ।

तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मीर्जायते नात्र संशयः ॥ ९ ॥

प्रातःकाले पठेद्यस्तु मन्त्रपूजापुरःसरम् ।

तस्य यात्रसमृद्धिः स्याद्द्रव्यमानो दिनेदिने ॥ १० ॥

यस्मै कस्मै न दातव्यं न प्रकाश्यं कदाचन ।

प्रकाशात्कार्योऽनिः स्यात्तस्माद्यत्नेन गोपयेत् ॥ ११ ॥

त्रैलोक्यमङ्गलं नाम स्तोत्रमेतत्प्रकीर्तितम् ।

ब्रह्मविद्यास्वरूपञ्च मलैश्चर्यप्रदायकम् ॥ १२ ॥

पठनाद्भारणान्मर्त्यरत्रैलोक्यैश्चर्यवान्भवेत् ।

यद्धृत्वा पठनाद्देवाः सर्वैश्चर्यमवाप्स्युः ॥ १३ ॥

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च धारणात्पठनाद्यतः ।

सृजत्यवति उरत्येव कल्पेकल्पे पृथक्पृथक् ॥ १४ ॥

पुष्पाञ्जल्यष्टकं देव्यै मूलेनैव पठेत्ततः ।

युगकालकृतायास्तु पूजायाः कृलमाप्नुयात् ॥ १५ ॥

प्रीतिमन्योन्यतः कृत्वा कमला निश्चला गृहे ।

वाणी वक्त्रे वसेत्तस्य सत्यं सत्यं न संशयः ॥ १६ ॥

अष्टोत्तरशतञ्चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः ॥ १७ ॥

भूर्जं विलिप्य गुलिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि ।

कण्ठे वा दक्षिणे वाङ्मौ सोऽपि सर्वतपोमयः ॥ १८ ॥

ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद्गात्रं प्राप्य पार्वति ।

माल्यानि कौसुमान्येव भवन्त्येव न संशयः ॥ १९ ॥

अस्यापि पठनात्सद्यः कुबेरोऽपि धनाधिपः ।

छन्द्राद्याः सकला देवा धारणात्पठनाद्यतः ॥

पुष्पाञ्जल्यष्टकं देव्यै मूलेनैव सकृत्पठेत् ।

संवत्सरकृतायास्तु पूजायाः कृलमाप्नुयात् ॥ २१ ॥

यो धारयति पुण्यात्मा त्रैलोक्यमङ्गलं त्विदम् ।

स्तोत्रन्तु परमं पुण्यं सोऽपि पुण्यवतां वरः ॥ २२ ॥

सर्वैश्चर्ययुतो भूत्वा त्रैलोक्यविजयी भवेत् ।

पुरुषो दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा ।

ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृन्तन्ति तं जनम् ।

पठेद्वा धारयेद्वापि यो नरो भक्तितत्परः ॥ २४ ॥

येतत्तु स्तोत्रमज्ञात्वा योऽर्ययेज्जगदीश्वरीम् ।

दासिधं परमं प्राप्य सोऽयिरान्मृत्युमाप्नुयात् ॥ २५ ॥

यः पठेत्प्रातरुत्थाय सर्वतीर्थङ्गलं लभेत् ।
 यः पठेद्दुःखयोः सन्ध्योत्तस्य विघ्नो न विद्यते ॥ २६ ॥
 धारयेधः स्वदेहे तु तस्य विघ्नं न कुत्रचित् ।
 भूतप्रेतपिशाचेभ्यो भयस्तस्य न विद्यते ॥ २७ ॥
 रणे य राजद्वारे य सर्वत्र विजयी भवेत् ।
 सर्वत्र पूजामाप्नोति देवीपुत्र एव क्षितौ ॥ २८ ॥
 अेतत्स्तोत्रं मङ्गलपुण्यं धर्मकामार्थसिद्धिदम् ।
 यत्र तत्र न वक्तव्यं गोपितव्यं प्रयत्नतः ॥ २९ ॥
 गोपितं सर्वतन्त्रेषु सारात्सारं प्रकीर्तितम् ।
 सर्वत्र सुलभा विद्या स्तोत्रमेतत्सुदुर्लभम् ॥ ३० ॥
 शठाय भक्तिहीनाय निन्दकाय मधेश्वरि ।
 न्यूनान्गो अतिरिक्ताङ्गो कूरे मिथ्याभिभाषिणे ॥
 यत्र तत्र न वक्तव्यं मया तु परिभाषितम् ।
 दत्वा तेभ्यो मधेशानि नश्यन्ति सिद्धयः क्मात् ॥ ३२ ॥
 मन्त्राः पराङ्मुखा यान्ति शापं दत्वा सुदारुणम् ।
 अशुभञ्च भवेत्तस्य तस्माद्यत्नेन गोपयेत् ॥ ३३ ॥
 गोरुचनान्कुङ्कुमेन भूर्जपत्रे मधेश्वरि ।
 लिप्त्वा शुभयोगे य ब्रह्मेन्द्रौ वैधृतौ यथा ॥
 कुमारीं पूजयित्वा तु देवीसूक्तं निवेद्य च ।
 पठित्वा भोजयेद्विप्राधनवान्वेदपाठगान् ॥ ३५ ॥
 मासमेकं पठेद्यस्तु प्रत्यङ्गं नियतः शुचिः ।
 द्वा भवेद्भविष्याशी रात्रौ भक्तिपरायणः ।
 तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्यात् सत्यं सत्यं मधेश्वरि ॥ ३७ ॥
 षट्सहस्रप्रमाणेन प्रत्यङ्गं प्रजपेत्सदा ।
 षण्मासैर्वा त्रिभिर्मासैः षेत्रोभवति ध्रुवम् ॥ ३८ ॥
 अपुत्रो लभते पुत्रमधनो धनवान्भवेत् ।
 अरोगी बलवांस्तस्य राजा य दासतामियात् ॥ ३९ ॥

य अवेवं कुरुते धीमान्स अवेव कमलापतिः ।

स अवेव श्रीमहादेवस्तस्य पत्नी हरिप्रिया ॥ ४० ॥

बहुना किमिडोक्तेन स्तवस्यास्य प्रसादतः ।

धर्मार्थकाममोक्षञ्च लभते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥

एति ते कथितं देवि त्रैलोक्यमङ्गलाभिधम् ।

लक्ष्मीस्तोत्रं महापुण्यं संसाराण्यवतारकम् ॥ ४२ ॥

ऋजवे सुचरित्राय विष्णुभक्तिपराय य ।

दातव्यञ्च प्रयत्नेन परमं गोपनं त्विदम् ॥ ४३ ॥

॥ एति श्रीशङ्करभाषितं त्रैलोक्यमङ्गलनामकलक्ष्मीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

छिन्दी भावार्थ -

हे देवि ! तुम कल्याणदायिनी हो, तुम्हें नमस्कार है ।

हे हरिवल्लभे ! तुम्हें प्रणाम करता हूँ । हे लक्ष्मीदेवि !

तुम भक्तजनों के अनुरक्त हो, तुम्हें नमस्कार करता हूँ ॥ १ ॥

हे देवि ! तुम मायाके वश होकर अनेक प्रकार के

दोष धारण करती हो । हे विष्णु प्रिये ! तुम्हें नमस्कार है ।

हे देवि ! तुम सबकी ईश्वरी हो, तुम्हें प्रणाम करता हूँ ॥ २ ॥

हे लक्ष्मी देवि ! तुमने ही महामायारूप से जगत को

मोहित किया है, तुम विष्णु की धर्मपत्नी हो । हे हरिप्रिये !

तुम सबकी वाञ्छा पूर्ण करती हो, इसलिये हे सुरेशानि !

मैं तुमको नमस्कार करता हूँ ॥ ३ ॥

हे देवि ! तुम्हारी हीमि उदय हुआ है और सूर्यो के

समान दुर्निरीक्ष्य है अर्थात् एतना तेज है कि देवी नहीं

जाती; तुम तीन नेत्रों से परम शोभा पाती हो । हे देवि!

केवल तुम्हीं रत्नों का आधार हो । मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

हे जननि ! तुमने विशिष्ट वस्त्र पहनकर मनोहर

शोभा धारण की है, केवल तुम्हारे अनुग्रह से ही

भवद्गुणविमोचन होता है अर्थात् संसारी दुःख छूट

जाता है; तुम्हारे सिवाय और कोई भी संसारबन्धनरूप

दुःखसागर से रक्षा करने में समर्थ नहीं है । हे देवि!

तुम्हारा अङ्ग पुष्ट उरोजों (कुर्थों) के त्मार से नम्र है;
मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ ॥ ५ ॥

हे देवि ! तुम साधकगणों का मनोन्मीष्ट (मनका
अभिलाष) पूर्ण करती हो; तुम अन्नदानद्वारा प्राणियों
की श्रुवनरक्षा में निरन्तर व्याप्त रहती हो, तुम्हारे
पवित्र शरीर में पाप का लेशमात्र नहीं, हे मातः !
सदा वैकुण्ठनाथ विष्णु के लृष्ट्यमें आनन्द देती हो ।
मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ ॥ ६ ॥

हे लक्ष्मीदेवि ! तुम देल में षट्कोशपद्मरूप से वास
करती हो, तुम षडङ्ग युवती (सब दैविक स्त्रियों) में
पतिव्रता हो । तुम ही ब्रह्माणी वाराही धत्यादि मातृगण
नाम से कही गई हो, तुम्हें नमस्कार है ॥ ७ ॥

हे लक्ष्मीदेवि ! तुम्हारा वदनकमल पूर्णचन्द्रमा के
समान रमणीय है, तुम प्रसन्न होने से यक्षवतीराज्य
तक दे सकती हो, तुम ही सबको आनन्द देनेवाली हो
तुम्हें नमस्कार करता हूँ ॥ ८ ॥

जो मनुष्य पूजाके समय सावधान होकर इस
स्तोत्र का पाठ करता है, उसके घर निःसन्देह कमला
अचल होकर सदा वास करती है ॥ ९ ॥

जो मनुष्य प्रातःकालके समय मन्त्र और पूजादि
समाप्त करके लक्ष्मीस्तोत्र का पाठ करता है, उसके
घर अन्न और समृद्धि की वृद्धि होती है और वही
मनुष्य दिन र श्री (लक्ष्मी) की वृद्धि को प्राप्त
होता है ॥ १० ॥

जिस किसी के लिये यल स्तोत्र नहीं देना चाछिये
अर्थात् सर्व साधारण मनुष्यको इसका दान करना
उचित नहीं, इसे सदा गुप्त रभना उचित है । उसको
साधारण मनुष्य के निकट प्रकाश करने से कार्य
विह्वल और अनिष्ट होने की अत्यन्त सम्भावना होती
है, इसलिये यत्नसहित इसको गुप्त रभें ॥ ११ ॥

यत् स्तोत्रं तीर्णो लोको को मङ्गल दानेवाला है;
यत् ब्रह्मविद्यास्वरूपं और महेश्वर्यदायक है इसमें
सन्देह नहीं ॥ १२ ॥

इस स्तोत्र का पाठ व इसको धारण करने से
मनुष्य सलज्ज ही में त्रिभुवन के ईश्वर हो सकते हैं, यत्
स्तव पढते ही इसके प्रसाद से देवताओं के समान
सब औश्वर्य प्राप्त होते हैं ॥ १३ ॥

इस स्तव के धारण और अध्ययन करने से ही
जगत्स्रष्टा ब्रह्माज्ञ कल्प कल्प में नानाविधि
सृजन करते हैं और इस स्तवराज के प्रसाद से
ही देवदेव विष्णु सृष्टिको प्रतिपालन और रुद्रदेव
सबका संहार करते हैं ॥ १४ ॥

मूलमन्त्र पाठ करके लक्ष्मीदेवीको आठ पुष्पाञ्जली
देकर फिर इस स्तवका पाठ करके युगकालीनकृत
(अेक युग तक किये हुआ) पूजाका फल मिलता है ॥ १५ ॥

इस परमपवित्र स्तवराज को अध्ययन करने से
लक्ष्मीदेवी उसके प्रति परमप्रीति लाभ करती है जो
मनुष्य इस स्तोत्र का पाठ करता है उसके कण्ठ में
वाग्देवी निरन्तर वास करती है, इसमें किसी प्रकार
का संशय नहीं ॥ १६ ॥

यत् स्तवराज अष्टोत्तरशत (१०८) बार अध्ययन
करने से ही इसका पुरश्चरण होता है ॥ १७ ॥

जो मनुष्य भोजपत्र पर इस स्तव को लिख तावीज
बनाये, उस तावीज को सुवर्ण में मढाकर कण्ठ अथवा
दाहिनी भुजा में धारण करता है, वत् निःसन्देह
सर्वतपोमय होता है ॥ १८ ॥

हे पार्वती ! जो मनुष्य यत् स्तोत्र अपने गात्रमें
धारण करता है, किसी प्रकार का भी अस्त्र शस्त्र प्रक्षिप्त
(प्रयोग किया हुआ) हो वत् इस धारण करनेवाले के
गात्र में निपतित हो जाय, किन्तु वत् उसको कुसुम-

मावा के समान बोध होता है, इसमें सन्देह नहीं ॥ १९ ॥

सर्वसिद्धीश्वराः सन्तः सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः ॥ २० ॥

इस स्तोत्र का पाठ करने से ही इसके प्रसाद से कुबेर को धनाध्यक्ष पद प्राप्त हुआ है और इन्द्रादिवतागण भी यल स्तव धारण और अध्ययन करके सब प्रकार सिद्धिवाप्त करते और सब प्रकार के ऐश्वर्यक लाभ को प्राप्त हुए हैं ॥ २० ॥

जो मनुष्य मूलमन्त्रपाठपूर्वक देवीको आठ पुष्पाञ्जली देकर केवल ऐक्यार इस स्तोत्रका पाठ करता है, वह संवत्सरकृत (ऐक वर्षतक करी कुछ) पूजा के फलको प्राप्त होता है ॥ २१ ॥

जो पुण्यवान् मनुष्य त्रिलोकीका मङ्गलदाता यल परम पवित्र स्तोत्र धारण करता है वह पुण्यवान् पुरुषों में अग्रणी कलकर कीर्तित होता है ॥ २२ ॥

अङ्गुपुत्रवती भूत्वा वन्ध्यापि लभते सुतम् ॥ २३ ॥

जो पुरुष भक्ति सखित यथानियम भोजपत्र पर यल स्तोत्र लिखकर टाङ्गिनी भुजा में धारण करता है, वह सर्व ऐश्वर्यवान् होकर त्रिलोक का विजय करनेवाला होता है, और जो स्त्री बाँझ भुजा में धारण करती है वह अङ्गुपुत्रवती होती है । इस पवित्र स्तोत्रको धारण करने से वन्ध्या अर्थात् बाँझ स्त्रियें भी सर्वोत्तम पुत्र को प्राप्त करती हैं ॥ २३ ॥

जो मनुष्य भक्तितत्पर यित्त से इस स्तोत्र का पाठ करता है, अथवा अपने शरीर में धारण करता है, उसको क्या शस्त्र क्या अस्त्रादि अधिक क्या ब्रह्मास्त्र भी छेदन करने में समर्थ नहीं हैं ॥ २४ ॥

इस स्तोत्र को न जानकर जो मनुष्य जगदीश्वरी की पूजा करता है, वह परम दरिद्रताको प्राप्त होकर शमन भवन को गमन करता है ॥ २५ ॥

जो मनुष्य प्रातःकाल उठकर षस स्तवराजका पाठ
करता है, उसको सब तीर्थों में जाने का फल मिलता है,
और जो मनुष्य दोनों सन्ध्याओं के समय यल स्तवराज
अध्ययन करता है, उसको किसी प्रकारके विघ्न में
निपतित होना नहीं होता ॥ २६ ॥

जो मनुष्य यल स्तोत्र अपने देलमें धारण करता है
उसको किसी प्रकार का विघ्न आकमण नहीं कर
सकता और भूत, प्रेत, पिशाचप्रभृति से भी उसको
भय उत्पन्न होने की कोल सम्भावना नहीं है ॥ २७ ॥

जो मनुष्य षस स्तोत्र को पाठ व धारण करता है,
वल क्या रण में, क्या राजद्वार में, सर्वत्र ली विजयलाल
करता है और सर्वत्र सब ली उसकी पूजा करते हैं वल
देवीके पुत्र के समान पृथ्वीतल में परम सुभ से
विचरण करता है ॥ २८ ॥

यल स्तोत्र परम पवित्र है, षसके द्वारा धर्म और
काम की सिद्धि होती है षसको जलं तलं प्रकाश
करना उचित नहीं है, षसको यत्नसहित गुप्त रभना
यालिये ॥ २९ ॥

और जो कोल विद्या भी ज्यों न हो, सर्वत्र ली
सुलभतासे प्राप्त हो जाती है, परन्तु यल स्तोत्र
अति दुर्लभ जानना यालिये । सारकाली सारभूत
यल स्तोत्र सम्पूर्ण तन्त्रों में गोपनीय कलकर कीर्तित है ॥ ३० ॥

न स्तवं दशयैदिव्यं परमं सुरदुर्लभम् ॥ ३१ ॥
हे मलेश्वरि ! जो मनुष्य शठ लक्ष्मी की लक्तिविहीन,
जो पराल निन्दा करनेवाला है और जो मनुष्य
विकलाङ्ग अथवा जिसकी देल अतिस्थूल (बड्ी)
है, जो मनुष्य क्रूर और जूठ बोलनेवाला है, उसको
कभी यल देवताओं को भी दुर्लभ, परम पवित्र
दिव्यस्तोत्र दान न करना यालिये ॥ ३१ ॥

हे मलेशानि ! यल मेरा कल लुआ स्तोत्र जलं तलं

नहीं कलना थालिये । उन पूर्वोक्त अनधिकारियों को
यल स्तोत्र प्रदान करने से समस्त सिद्धियें कमकम से
नष्ट हो जाती हैं ॥ ३२ ॥

जो मनुष्य साधारण मनुष्यके निकट इस स्तवको
प्रकाश करता है, उससे सम्पूर्ण मन्त्र विभुम हो
दारुणशाप देकर पलायन कर जाते हैं और अनेक प्रकार के
अशुभ उपस्थित होते हैं, इस कारण यत्नसहित इसको
गुप्त रचना थालिये ॥ ३३ ॥

सर्वार्थसिद्धिमाप्नोति सत्यं सत्यं न संशयः ॥ ३४ ॥

हे मलेश्वरि ! यहि ब्रह्मा अथवा इन्द्र भी शुभयोग
में भोजपत्रपर गोरौयना और कुंकुम से लिपकर
यल स्तव धारण करे, तो वल भी सर्वार्थ सिद्धि लाभ
करते हैं, इसमें संशय नहीं ॥ ३४ ॥

नाधयो व्याधयस्तस्य दुःखशोकभयं भवेत् ।
वादी मूको भवेद् दृष्ट्वा राजा य सेवकायते ॥ ३६ ॥

प्रथम कुमारी की पूजा करके देवीसूक्तपाठ पूर्वक इस
स्तवराज का पाठ करे, इसके पीछे वेद के जाननेवाले
ब्राह्मणों को तृप्ति देनेवाला भोजन करावे; इसप्रकार
करने से जगत् में सबकी अपेक्षा धनवान हो जाता
है । जो मनुष्य इस प्रकार विधानानुसार इस स्तवराज
का पाठ करता है, उसको आधि, व्याधि, दुःख,
शोक, भय, कुछ भी आक्रमण व परास्त करने में समर्थ
नहीं होते हैं, उसके केवल देभने से ही बोलनेवाले को
मूकता प्राप्त होती है और राजा भी दास के समान
वश में हो जाता है ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

हे मलेश्वरि ! जो मनुष्य दिन में ढविष्यात्र भोजन
कर के रात्रियोग में भक्तिपरायण हो विशुद्धाचार
सहित ओक महीने तक इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसको
निःसन्देह संपूर्ण सिद्धियें मिलती हैं ॥ ३७ ॥

जो मनुष्य प्रतिदिन छः महीने तक वा तीन महीने

तक दररोज छः हजार बार इस स्तोत्र का जप करता है
उसको भेयरी सिद्धि मिलती है ॥ ३८ ॥

इस स्तव के प्रसाद से अपुत्र मनुष्य को पुत्र और
धनहीन को धन मिलता है, इसके प्रभाव से डी रोगों
से छूटकर अतुलबल, वीर्यलाभ किया जा सकता है,
जो मनुष्य विधानानुसार इस स्तवराज को पढःता व
धारण करता है, उसके निकट राजा भी दास के
समान वश में हो जाता है ॥ ३९ ॥

जो बुद्धिमान् यथाविधि इस स्तव का पाठादिक
करता है, वह हरि के सायुज्यपद को प्राप्त होता है,
वही सदाशिव के समान होता है, और उसकी स्त्री
कमला (लक्ष्मी) के समान होती है ॥ ४० ॥

अधिक और ज्या कलू ! इस स्तवके प्रसाद से धर्म
अर्थ, काम, मोक्ष यारों वर्ग ही प्राप्त हो जाते हैं,
इस में संशय नहीं ॥ ४१ ॥


हे देवि ! मैंने यह तुम से भवसागर के परित्राण
(रक्षा) का कारण मलापवित्र त्रैलोक्य मङ्गल नामक
लक्ष्मीस्तोत्र कथन किया ॥ ४२ ॥

यह स्तोत्र परम गोपनीय (गुप्त रहने योग्य) है ।
केवल सुयश्चिन्त, सरल और विष्णु की भक्ति करनेवाले ।
मनुष्य को ही इसका दान करें ॥ ४३ ॥

॥ इति श्रीशङ्करभाषितं त्रैलोक्यमङ्गलनामकलक्ष्मीस्तोत्रं
कान्यकुब्जवंशावतंसकात्यायनगोत्रोद्भवमिश्रसुभानन्दसूनुपण्डित-
कन्धैयालालमिश्रमुरादाबादनिसिद्ध-भाषा-टीकासहितं सम्पूर्णम् ।

Proofread by Aruna Narayanan

pdf was typeset on February 2, 2024

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

